RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

दुष्यन्त कुमार के कथा साहित्य में सामाजिक युगबोध

Dr.SurenderKumar

M.a,M.phil(Hindi),M.ed,M.phil (Education) Lectruer Hindi at Gsss(Kosli) (India)

साहित्यकार समाज को आईना होता है । और दूष्यन्त कुमार भी इसका समर्थन करते है। उनके कथा साहित्य में कथसाहित्य का समाजविषय युगबोध का सच्चा पुरूष निदर्शन मिलता है वह इस प्रकार है:–

1 नारी विषयक चित्रण : हमारा समाज पुरूष प्रधान है वह नारी की स्थिति को हीन बताते है। नारी को चारा दिवरो में कैद कर रखा है। वह उसे आजाद करवाना चाहते है। दुष्यन्त कहते है एक दिन नारी आजाद होगी। समाज में हर तरह से बढ़–चढ़ कर कार्य करेगी। नारी पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। लेकिन पुरूष उसे स्वीकार नहीं करता है । यह समाज नारी को आत्मनिर्भर होने पर भी पुरूष के उपर निर्भर होने पर मजबूर कर रहा है। दुष्यन्त ने नारी पर एक 'छिमिया' नामक कहानी लिखी है। 'छिमिया' कहानी में लेखक ने एक ओर नारी के आत्मनिर्भर होने के बात कही है वही दूसरी तरफ उसके नारी को समाज में पति पर निर्भर रहने वाली कहा है। 'छिमिया' कहानी में छिमिया स्वय कहती है, "मेरे पति चाहते थे कि मैं सरकारी या ऐसी प्राइवेट नौकरी करू जिसमें परोपकार और सम्मान चाहे रती भर न हो , पर पैसा खूब हो ।"[1]

आज पुरूष की मनोवृति बन गई है कि पत्नी किसी तरह पैस कमाए वह पैसे के पिछे इतना भाग रहा है कि उसे अपने आत्मविश्वास के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा है। जब छिमिया इस तरह की नौकरी से दुखी होती है और वह उसे छोड़ना चाहती है तो उसका पति उसे छोड़ने नहीं देता है। वह किसी भी प्रकार के निर्णय लेने में समर्थ नहीं हैं। इस कहानी के माध्यम से दुष्यंत यही बताना चाहता है कि नारी अपने निर्णय से नहीं बल्कि अपने पति के निणर्यो से कार्य करती है। वही निर्धारण करता है कि उसे काम करना है। या नहीं चाहे वह करना चाहती है या नहीं। भारतीय संस्कृति, इतिहास ओर मिथक में कभी –कभी बहुत विकासमान स्थिति का पता तो चलता है पर वह आगे बढ़ती नहीं।

इतिहास में ध्रुवस्वामिनी भी रामगंप्त के लिए तैयार रहे। ध्रुवस्वामिनी भी रामगुप्त से सवाल करती है कि "आज यह निर्णय हो जाना चाहिए कि मैं कौन हूँ।" स्त्री से जब यह मागं की जाती है कि वह पुरूष के साथ चले उसका हिस्सा बने तो छिमिया कहती है कि मैं अपनी खुशी के लिए यह चाहती हूँ तो पुरूष को भी उसका साथ देना चाहिए । इस छिमिया कहानी के माध्यम से यही बताना चाहती है कि औरत को अपने अधिकार लिए लड़ना चाहिए । उसे भी सभी अधिकार मिलने चाहिए जो एक पुरूष को मिलते है।[2] सिर्फ कहने के लिए नहीं बल्कि उनका जीवन में भी लागू होने चाहिए।

2 समाजिक विसंगतियाँ:दुष्यन्त ने समाज ने में होने वाली विभिन्न बुराइयों का वर्णन किया है। इसमें लेखक ने अपनी कहानी 'कलयुग' में सत्य पर असत्य की विजय दिखाई है।

'कलयुग' कहानी में बताया गया है कि समाज में सच बोलने वालो का कोई महत्व नहीं है। इस कहानी में अन्याय, असत्य, अत्याचार का प्रतीक बनकर उभरा है। वह कहते है–"यह मेरा युग है सत्य का नहीं । तू सत्य को छोड़कर मेरी शरण में आ जा।"[3]

इस कहानी में लेखक आस–पास के माहोल का वर्णन करता है किस प्रकार लोग झूठ बोलकर अपना काम निकाल लेते है। इस कहानी में एक गरीब ब्रह्मणी साहुकार से पैसे मागंती हैजो उसने कुछ समय पहले साहुकार को दिये थे। लेकिन साहुकार देने से इनकार कर देता है वह कहता है कि "तुझे खाने को तो मिलता नहीं । फिर तेरे पास मुझे देने के लिए पाँच सौ रूपये कहाँ से आए"[4] इस प्रकार वह मना कर देता है। और उसे पचांयत में लज्जित भी बहुत करता है। इस कहानी में सत्य को विवश होते हुए दिखाया है। वह जब ब्राह्मणी ने असत्य का मार्ग अपनाते हुए साहुकार से पाँच सौ की बजाएँ पाँच हजार रूपये मागे तो साहुकार ने उसे देने पड़े। इस कहानी के माध्यम से लेखक कहता है जहाँ सत्य का कोई साथ नहीं देता तो वह असत्य के लिए सभी एक साथ हो जाते है।

3 व्यवस्था के प्रति विद्रोह :दुष्यन्त कुमार का अपने समय और समाज का गहरा सम्बध रहा है। जहाँ भारत में राजनीतिक दलों में लोकतन्त्र का स्वस्थ विकास पर ध्यान दिया वहाँ हिन्दी कहानी ने अपने लोकतान्त्रिक रूप की ओर अधिक स्वस्थ समृद्ध किया।

'छिमिया' और कलयुग आदि कहानी में दुष्यन्त कुमार ने सामाजिक व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश उभकर सामने आया है। कलयुग कहानी में दुष्यन्त ने सत्य को शर्मसार होते हुए दिखाया है। वही आज भी समाज में सत्य की कोई अहमियत नहीं है। लोग त्रेतायुग को सत्य का प्रतीक मानत है वह कलयुग को असत्य का तभी तो कलयुग स्वयं कहता है –"यह

[1]दुष्यन्त कुमार, छिमिया (कहनी) पृ. 30

[2]दुष्यन्त कुमार, छिमिया (कहानी)पृ 33

[3]दुष्यन्त कुमार, छितमया (कहानी) पृ. 2

[4]वही पृ. 15

RRIJM 2015, All Rights Reserved

मेरा युग है सत्य का नहीं, सत्य को छोड़कर मेरी शरण में आ जा।"[5] तत्कालीन व्यवस्था में चारो तरफ शोषण हो रहा है। ऐसी स्थिति में कोई सत्य का कब तक साथ दे सकता है। यदि कोई व्यक्ति के साथ देता है तो लोग उस पर विश्वास नहीं करते है।

दुष्यन्त कुमार ने अपने उपन्यास 'छोटे–छोटे सवाल' में इसी तरह की बुराईयों का विवरण किया है। आज हमारे समाज की पूरी व्यवस्था खोखली हो चूकी है। इसी प्रकार सभी लोगोतक समाज की बुराई पहुँचा रहा है लेकिन लोग सोते रहते है जो लोग इसके खिलाफ आवाज उठा रहे है। उन्हे ही बेसहारा बना दिया जाता है। हमारे देश की स्थिति वही ही मार्मिक है। यहाँ लोग अपने भले के लिए किसी का भी शोषण कर सकते है।

खोखले परिवारिक संबन्धो की समस्याःदुष्यन्त कुमार ने अपने उपन्यास 'आगमन में एक वृक्षा' के माध्यम से खोखले परिवारिक रिश्तों को भी उजागर किया है। इस उपन्यास में 'बिज्जी' को छोडकर सभी पात्र खोखले रिश्ते निभा रहे है।धन व सम्पति को पाने के लिए मनुष्य किसी भी हद तक जा सकता है इस कहनी का मुख्य पात्र चौधरी साहब है। वकील रामप्रसाद ने अपनी बेटी की शादी के बाद चौधरी साहब ने अपने घर रख लिया ताकी वह उसे कार्यो में उसका हाथ बटा सके लेकिन चौधरी साहब ने अपने ससुर की सारी सम्पति को अपने कब्जे में लेने की योजना बना रहा है। उसकी पत्नि के अचानक से मौत हो जाती है। वकील सहाब उसकी शादी करवा देते है। उसे अपना बेटा बना लेते है।चौधरी साहब कहते है कि चन्दन तो नाबालिक है। वह इस सम्पति को संभाल नहीं सकता है लेकिन फिर भी पैसे के लिए ही अपने बेटे के साथ रहता है जब उसका बेटा बिमार हो जाता है तो वह उसे देखने तक नहीं आता है। केवल एक बिज्जी ही है जो इस परिवार को सेवा बिना किसी स्वार्थ के करती है। वह चौधरी अपनी चालाकी से सब कुछ प्राप्त कर लेता है। वह इस सम्पति को प्राप्त करने के बाद अपने परिवार की तरफ कोई ध्यान नहीं देता है। वह अपनी पत्नी व बेटे को छोड़कर शराब व वेश्पालो में जाने लगता है । वह इन सभी चीजों में अपनी सम्पति को लुटाने चला जाता है। वह अपने बेटे के भविष्य के बारे में कुछ नहीं सोचता है।इसमें लोग अपने स्वार्थ के लिए दूसरो के साथ उच्छा व्यवहार करते है। और अपना स्वार्थ सिद्ध होने पर सब भूल जाते है।

5 स्वार्थ और संवेदनहीनता की समस्याःहर व्यक्ति का जीवन में सघर्षो का सामना करना पड़ता है। इन परेशानियों के कारण हम सिर्फ अपने बारे में सोचते है। सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए मनुष्य दूसरे को किसी भी हद तक नुकसान पँहुचा सकता है। दुष्यन्त ने इन्ही सभी विचारो और समस्याओं को 'आगँन में एक वृक्ष' में रखा है। लल्लू का स्वप्न इसी आधार पर प्रस्तुत किया गया है। लल्लू स्वप्न में देखता है उसका भाई चंदन एक घायल खरगोश को लेकर आता है। वह उसकी पीड़ा को महसूस कर सकता है। इन सब को देखकर चौधरी साहब कहते है इसको मार दो और वह बन्दुक से उस खरगोश को मार देती है।

इसी प्रकार लल्लु अपने दूसरे स्वप्न में देखता है कि उसने देखा की चन्दन का पौधा उसके आगँन में उग आता है। धीरे–धीरे वह पौधा बड़ा होता है। लेकिन एक दिन वह पौधा सुख जाता है। जब इस बात का पता लगाया गया कि पौधा क्यों सूख रहा तो पता चला की जिस पानी से उसे सिचा जाता था उस घड़े के पानी में शराब मिली हुई है। जो भेना जी ने मिलाई थी।

इस प्रकार लेखक ने अपने सपने के माध्यम से लोगो को सदेश दिया है कि हमारे समाज में बहूत सी बुराईया है। कभी वह बन्दुक की गोली की तरह तथा कभी वह शराब की तरह हमारे जीवन में बहुत सी समस्याए ले आती है। इस कहानी के माध्यम से हमें पता चलता है कि किस प्रकार चौधरी व भेजा जैसे लोग अपने स्वार्थ के लिए किसी भी हद तक चले जा सकते है । वह लोग को कितनी तकलीफ हाती है इसका किसी को कोई लेना देना नहीं वह सिर्फ अपने बारे में सोचते है। अपने स्वार्थ के लिए किसी ना किसी के जीवन को भी समाप्त करना पड़े तो लोग वो भी कर सकते है। इस उपन्यास में दिखाया गया है कि सभी पात्र स्वार्थी एवं संवेदनशील लगते है।

इस उपन्यास का नायक चन्दन है। सारे उपन्यास के पात्र चन्दन से जुड़े हुए है। परिवार की कलह व स्वार्थ में चन्दन का बचपन गुजर जाता है। इस चन्दन के मन में बचपन से ही परिवार की कलह व स्वार्थ का प्रभाव पड़ा है। परिवार यह स्वार्थता और कलह चन्दन को उसकी मौत तक पहुचा देती है।

6 अर्थसभ्यताःहमारे समाज में आजादी के बाद अर्थसभ्यता का उदय हो चुका है। इसीलिए मनुष्य मशीन सा बन गया है। मनुष्य को समान व समाज के नियमों से कोई लेना देना नहीं है। अर्थ सभ्यता न केवल माता – पिता व बच्चो के सम्बन्ध को मजबूत बनाती है बल्कि मातृभाव और दम्पत्य – माधुर्य को भी यह मजबूत बनाती है। यह अर्थ सभ्यता न केवल एक शहर एक राज्य को नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाधती है। 'आगन में एक वृक्ष' में इसी तरह के पात्र है। वे सब चन्दन के इरध–घिर्द घुमते हुए नजर आ रहे है। चन्दन एक सभ्य लड़का है और परिवार के पात्र, रिश्ते–नाते सभी गौण साबित होते है।

आज हमारे समाज की व्यवस्था पर भी अर्थ व्यवस्था निरन्तर हावी होती जा रही है। इस उपन्यास के मुख्य पात्र चन्दन की हार एक व्यक्ति की हार नहीं है बल्कि रिश्ते–नाते, प्रेम, त्याग सभी की हार है। चौधरी अपनी विलासिता के कारण अपना सब कुछ गवा देता है। वह बिलकुल भी नहीं सुधरता है। आज हम पैसा जीवन जी रहे है। वह धन सब कुछ बनता जा रहा, लोग धन के पीछे इस तरह पड़े हुए है कि वह अपना सब कुछ त्याग कर सकते है। जिस प्रकार चौधरी साहब ने अपने बेटे चन्दन के भविष्य को अंधकार में धकेल दिया था। उसी प्रकार मनुष्य किसी भी तरह घर में पैसे

[5]दुष्यन्त कुमार, कलयुग (कहानी) पृ. 17

आ जाए उसके लिए वह हर तरह का कार्य करने को तैयार हो जाता है। इसके लिए उसे अपने परिवार से या देश से गदारी क्यों न करनी पड़े।

7 ऐप्याशी, विलासिता, मद्यपान की समस्या :जब दुष्यन्त कुमार ने अपने उपन्यास 'आगंन में एक वृक्ष' की रचना की थी उस समय समाज में इन बुराईयों ने जन्म ले लिया था विदेशी शिक्षा या व्यवहार ने इन बुराईयों को ओर बडा दिया था। समाज में उच्च वर्ग व मध्यम वर्ग के लोग में ऐप्याशी, विलासिता, मद्यपान जैसी चीजे आ चुकी थी। उच्च वर्ग के लोग अपने फादे के लिए निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करते थे। इसमें लेखन पाठकों का इन बुराईयों की तरफ ध्यान खींचकर वर्तमान स्थिति का वर्णन किया है।

आज का समाज अपने तक ही सीमित बात का किसी भी व्यक्ति पर कोई फर्क नहीं पडता है। लोग सिर्फ अपने या अपने परिवार तक ही बन कर रह गए है। आज भी स्वार्थी मनुष्यों की कमी नहीं है। जो अपनी ही सतांन को भला–बुरा नहीं देखते, आज हर पिता अपने बेटे को खुद अंधकार में धकेल रहा है। 'आगंन में एक वृक्ष' में एक पात्र चौधरी भी ऐसा ही कार्य कर रहा है वह अपने बेटे को बचपन में ही बुरी आदतों में डाल रहा है। भोग –विलास और धन की चमांचौध ने उसे सामान्य चौधरी से बहुत बडा जमीवार बना दिया है।

इस प्रकार चौधरी शराब का सेवन करते तो साथ हीवह भोग विलासा का भी सेवन करता था। जिससे वह अपनी इज्जत को तार–तार कर चुका था। यह सब वह अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु करता है। समाज में यही होता है। समाज अपने पतन की रहा पर चल रहा है। पिता पुत्र को बिगाड़ने लगा है तो माता – पिता भी अपने–अपने स्वार्थ मे लगे हुए है।

8 जमीदारी प्रथाःदुष्यंत कुमार ने अपने उपन्यास 'आगंन में एक वृक्ष' के माध्यम जमीदार प्रथा का वर्णन किया है। चौधरी साहब में समाज के प्रति स्नेह के भाव बिल्कुल नहीं है। वह समाज की मान्यताओं का अपनी इच्छा से प्रयोग करते है। इसके लिए वह पिता –पुत्र , पति –पत्नी आदि रिश्तो को भी हाशिये पर रख देता है। शायद पुजीपति लोग भी इसी तरह जीवन व्यतीत करते है।"पुजीवाद व्यक्ति सम्पति का एक मात्र आधार अर्थवाद ही है इसके अनुसार प्राचीन सभ्यता एवं सम्बन्धी का अन्त हो जाता है। पिता – पुत्र , पति पत्नि, शिक्षक–शिष्य आदि के परम्परागत सम्बध छिन्न भिन्न हो जाते है। "[6]

लेखक ने ये सभी बुराईया चौधरी साहब में बताई है। चौधरी साहब अच्छे पिता नहीं बन सके और न ही अच्छा पति उसने पुरे परिवार को बहुत दुख पहुचाएँ है। फिर भी चौधरी साहब के स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आता है। क्या यही जमीदार प्रथा है?

9 वचिंत एवं शोषित मनुष्य तथा सधर्षःइस समाज में हमेशा दो वर्गो का ही शोषण से वंचित होना पड़ा है। एक नारी दूसरा दलित। लेखन ने अपने उपन्यास 'आगँन में एक वृक्ष' में दलित वर्ग की चर्चा न करके नारी का वर्णन किया है किस प्रकार एक नारी अपने समाजिक अधिकारों से ही नहीं बल्कि अपने व्यक्तिगत अधिकाशं से भी वंचित है। चौधरी साहब अपने पत्नि पर अत्यधिक अत्याचार करते है तथा उसे तरह–तरह की यातनाए देने है। यहाँ तक की उन्होने अपनी पत्नी को भी पत्नी का अधिकार नहीं दिया है।

इस उपन्यास में नारी ही समाज में अपने अधिकारो से अधिक वचितं हैं। उसका शारीरिक व मानसिक शोषण किया जाता है और वह आजीवन कभी अधिकार पाने के लिए संर्घष करती रहती है। तो कभी वह पति व पुत्र का प्रेम प्राप्त करने के लिए तो कभी उन्हे उचित मार्ग पर जाने के लिए। नारी अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर रही है। लेखक ने 'आगँन में एक वृक्ष' नामक उपन्यास द्वारा नारी के अधिकारो, संघर्षो का भी वाणी दी है।

[6]डॉ॰ उर्मिला गम्भीर प्रतापनारायण श्रीवास्तव के उपन्यासो का समाज शास्त्रीय अध्ययन पृ॰ 24

RRIJM 2015, All Rights Reserved